मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2018-20 /R.N.I. No. 66400/97

24 घंटे बिजली सप्लाई का झांसा	3
अंतरिक्ष के लिए नई दौड़	4
किसानों की समस्याओं का समाधान कैसे होगा	5
विचार खिड़की : बिहार में का बा....	6
अब सीही के सत्यानाश की तैयारी	8

वर्ष 33 | अंक 49 | फरीदाबाद | 25-31 अक्टूबर 2020 | फोन-8851091460 | ₹3.00

दलित लड़की की मां ने मानवाधिकार आयोग टीम से कहा- पुलिसवालों ने बेटी की इज्जत से खेला

बुटाना गैंगरेप कांड में मजदूर मोर्चा की रिपोर्ट का आयोग ने लिया संज्ञान, मौके पर पहुंची

मजदूर मोर्चा टीम

सोनीपत: राष्ट्रीय मानवाधिकार (एनएचआरसी) की टीम ने बुटाना पुलिस चौकी में हुए गैंगरेप कांड की जांच शुरू कर दी है। तीन सदस्यीय टीम ने बुटाना में न सिर्फ गैंगरेप की शिकार लड़की, बल्कि गांव वालों, सरपंच और पुलिसकर्मियों के बयान दर्ज किए।

एनएचआरसी टीम के विमल ने मजदूर मोर्चा को बताया कि हमारी जांच अभी भी जारी है। लेकिन हम अपने नतीजे की जानकारी अभी मीडिया को नहीं दे सकते। हमारी टीम बहुत जल्द आयोग को अपनी रिपोर्ट सौंप देंगी।

मजदूर मोर्चा इस मामले को लगातार उठा रहा है। पिछले दो अंकों में प्रकाशित बुटाना मामले का संज्ञान लेते हुए एनएचआरसी टीम जांच करने के लिए पहुंची। इसके अलावा चंडीगढ़ से भी कई एनजीओ और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं की टीम ने भी बुटाना आकर मामले की पड़ताल की। टीम ने करनाल जेल में लड़कियों से भी मुलाकात व पूछताछ के साथ ही उनकी मेडिकल जांच करायी। इस मामले में सबसे ज्यादा हिम्मत लड़की की मां ने दिखायी है। उसने न सिर्फ राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की टीम को बल्कि चंडीगढ़ से आई टीम को वही बयान दिया, जो उसने मजदूर मोर्चा को दिए हैं।

लड़की की मां ने फिर स्पष्ट तौर पर कहा कि उसकी बेटी के साथ बुटाना पुलिस चौकी के अंदर 10-12 पुलिस वालों ने गैंगरेप किया। कार्रवाई के नाम पर बुटाना पुलिस चौकी के पुलिसकर्मियों का तबादला कर दिया गया है, लेकिन बुटाना पुलिस चौकी का इंचार्ज संजय अभी भी अपनी कुर्सी पर कायम है।

मां : बुटाना पुलिस ने उस रात बुटाना से कई और लड़कियों को भी उठाया था

29-30 जून की मध्य रात्रि बुटाना गाँव में दो पुलिस वालों की हत्या कर दी गई थी। इस हत्याकांड के आरोप में पुलिस ने 30 जून को ही तथाकथित एनकाउंटर में अमित नामक युवक को मार दिया था। पुलिस दबाव में दोनों लड़कियों में से एक की माँ ने अपनी नाबालिग लड़की को पुलिस को सौंपा था। बाद में लड़की की माँ ने चार दिन तक अपनी नाबालिग लड़की से 12 पुलिस वालों के द्वारा कस्टडी में गैंगरेप का भी आरोप लगाया था। लड़कियों की मां की शिकायत पर महिला थाना सोनीपत में राज्य महिला आयोग के निर्देश पर एक लूली-लंगड़ी एफआईआर दर्ज की गई। मजदूर मोर्चा की रिपोर्ट पिछले अंक में या मजदूर मोर्चा की वेबसाइट पर पढ़ी जा सकती है।

बुटाना कांड के बाद इस घटना पर सबसे पहली प्रतिक्रिया आम आदमी पार्टी ने देते हुए मारे गए पुलिस वालों को शहीद का दर्ज देने की मांग की थी। लेकिन मोर्चा की रिपोर्ट पढ़ने के बाद हरियाणा आप पार्टी प्रभारी एवं राज्यसभा सदस्य सुशील गुप्ता ने कहा कि उनकी पार्टी ने तथ्यों के अभाव में बेशक ये कहा था पर ज्यों-ज्यों अब बात खुल कर सामने आ रही है, हम सरकार से मांग करते हैं कि मामले की निष्पक्ष जांच की जाए। उन्होंने यह भी कहा कि उनकी पार्टी पीड़ित लड़कियों को न्याय दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है।

बरोदा उपचुनाव की मजबूरियां

इस मामले में छात्र एकता मंच और नौजवान भारत सभा के कार्यकर्ता पिछले कई महीनों से पीड़ित लड़कियों को न्याय दिलाने के लिए संघर्षरत है। लेकिन बरोदा में उपचुनाव होने के कारण जातीय समीकरणों को ध्यान में रखकर सरकार व पूरी मशीनरी मामले को दबाने में जुटी है। अब इस मामले में कई संगठन आ जुड़े हैं, जिनके साथ मिलकर छात्र एकता मंच व नौजवान भारत सभा 29 अक्टूबर को सोनीपत में एक भारी विरोध प्रदर्शन करके पीड़ित लड़कियों के लिए न्याय की मांग करने जा रहे हैं।

उधर, प्रदेश के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर नए तथ्यों के सामने आने के बाद भी मारे गए पुलिसकर्मी कप्तान सिंह जो आर्मी से रिटायर होकर पुलिस में एसपीओ लगा हुआ था, को भी शहीद का दर्जा देने की घोषणा कर रहे हैं। इसके पीछे स्पष्ट कारण दिख रहा है कि जाट बहुल बरोदा हलके में मारे गए पुलिसकर्मी जो जाट थे, को अपराधी मानकर जाट वोट नहीं खोना चाहते हैं। उनके लिए पीड़ितों को न्याय देने से ज्यादा चुनावी जीत अधिक

शेष पेज दो पर

यू.एस. वर्मा : मॉर्डन डीपीएस फरीदाबाद का प्रिंसिपल है या शहर का डॉन

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: मॉर्डन डीपीएस के प्रिंसिपल और डायरेक्टर यू.एस. वर्मा नए विवादों में घिर गए हैं। इस बार उन पर बच्चों के माता-पिता को पूरी फीस न देने पर धमकी देने का आरोप लगा है। उनकी धमकी का आडियो-वीडियो सोशल मीडिया पर घूम रहा है लेकिन शिक्षा विभाग से लेकर जिला प्रशासन मूक दर्शक बना हुआ है। सभी अधिकारी उस आडियो-वीडियो को सुन और देख चुके हैं लेकिन किसी भी स्तर पर अभी तक वर्मा से उस पर सफाई नहीं मांगी गई है।

आडियो-वीडियो आया सामने

हाईकोर्ट के आदेश के बावजूद मॉर्डन डीपीएस सहित शहर के तमाम स्कूल एमवीएन, सेंट कोलम्बस, संस्कृति स्कूल, जीडी गोयनका स्कूल, विद्या मंदिर, एपीजे, डीपीएस मथुरा रोड फरीदाबाद, अरावली इंटरनैशनल, डीएवी पब्लिक स्कूल की सभी ब्रांच और अन्य स्कूल अभिभावकों से आनलाइन पढ़ाई और लॉकडाउन के बावजूद पूरी फीस के अतिरिक्त वसूल रहे हैं। कुछ स्कूलों ने ट्रांसपोर्ट फीस भी वसूली है। लेकिन अभिभावकों को फीस के लिए धमकाने में सिर्फ यूएस वर्मा का नाम सामने आया है। वर्मा ने हाल ही में पैरंट्स एसोसिएशन के लोगों से बात करते हुए एक बच्चे के पिता

खुलेआम अभिभावकों को धमकियां देता है, आडियो-वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल

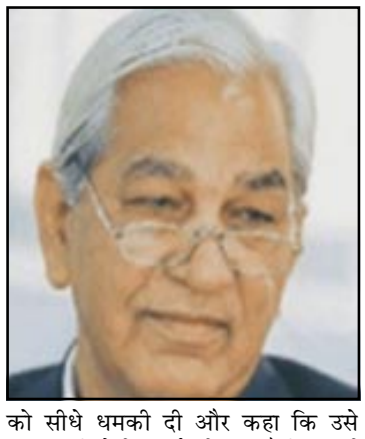

को सीधे धमकी दी और कहा कि उसे (सजा) मिलेगी। वर्मा की उस नौ मिनट की बातचीत को किसी सदस्य ने रेकॉर्ड कर लिया। उसके बाद उस बातचीत की आडियो पूरे फरीदाबाद में अभिभावकों के मोबाइल पर पहुंच गई। फिर उस आडियो की वीडियो बनाकर वर्मा की फोटो के साथ यूट्यूब पर अपलोड कर दिया।

इस वीडियो को एडवर्ड जैक्सन नामक सोशल मीडिया यूजर ने 18 अक्टूबर को यूट्यूब पर डाला है। इस वीडियो का यूआरएल है-https://www. youtube.com/watch?v= BUz~S_LUHNI & feature=youtu.be इसके बाद से यह वीडियो भी वायरल हो रहा है। इस वीडियो में अभिभावक को धमकी देने के अलावा यूएस वर्मा कहते हुए सुनाई दे रहे है कि वो पैरंट्स एसोसिएशन को कुछ नहीं समझता है। वो जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) को भी कुछ नहीं समझता है।

खास बात ये है कि वर्मा की धमकी वाला आडियो-वीडियो सभी दैनिक अखबारों और पत्रकारों को मिला। लेकिन सभी उस आडियो-वीडियो को पी गए। कुछ कथित राष्ट्रीय अखबारों ने मॉर्डन डीपीएस का पूरे पेज का विज्ञापन छापकर वर्मा को सुरक्षित करने की कोशिश की। अभिभावक लगभग असहाय की हालत में इन हालात को देख रहे हैं लेकिन गोदी मीडिया के प्रति उनका प्यार खत्म नहीं हो रहा है।

प्रशासन पर असर नहीं

फरीदाबाद की जनता में मॉर्डन डीपीएस

शेष पेज 2 पर

नीलम पुल के नीचे 'पराली' तो नहीं जली लेकिन धुएं ने फ़रीदाबाद को किया बेहाल

इस राज्य में अगर शासन-प्रशासन नाम की कोई चीज है तो इसके लिए जिम्मेदार अधिकारियों पर एफआईआर दर्ज की जानी चाहिए

फ़रीदाबाद (म.मो.) नीलम पुल के नीचे से निकली आग पराली जलाने का धुंआ नहीं था, ये रासायनिक कबाड़ा जला और पूरा शहर बदहाल हो गया। नगर निगम मुख्याल से मात्र 300 मीटर के फ़ासले पर नीलम पुल के नीचे इस तरह का कबाड़ा नियमित रूप से जलाया जाता है। इस कबाड़े को जला कर कबाड़ी लोग विभिन्न तरह की धातुओं को अलग-अलग करते हैं। गुरूवार को लगी आग का मामला इस लिये चर्चा में आ गया कि इससे नीलम पुल के तीन-चार पिलर क्षतिग्रस्त हो गये तथा आस-पास खड़ी तीन-चार कारें भी जल गई।

22 तारीख की शाम चार बजे लगी इस भयंकर आग को काबू करने में रात भर अनेकों दमकल गाड़ियां लगी रही फ़िर भी अगले दिन दोपहर तक आग धधकती रही।

शेष पेज चार पर